प्रयास सुनहरे भविष्य का

सोसायटी फार सोशल एक्शन एण्ड रिसर्च (सार संस्थान) द्वारा सामाजिक हित के मूल उद्देश्यों को ध्यान में रखकर बुनियादी पर्यावरण एवं संपोषी विकास को बढ़ाने के उद्देश्य से योजनाएँ क्रियान्वित की जा रही है।

संस्था द्वारा स्कूली बच्चों एवं कम्युनिटी के माध्यम से समाज के आधारभूत विकास के विभिन्न कार्य किये जा रहे हैं।

वातावरण परिवर्तन, सुन्दरीकरण एवं स्वच्छता:- ग्लोबल वार्मिंग एवं क्लाइमेट चेंज पूरे विश्व का प्रमुख मुद्दा बन चुका है और इस प्राकृतिक संकट से प्रकृति के रक्षक पेड़, ही रक्षा कर सकते है वे हमें जीवनदायी वायु प्रदान करते है तथा वातावरण को शुद्ध रखते है, वाराणसी एक प्राचीन शहर है यहाँ पर कुछ दशक पूर्व तक जहाँ हजारों कुंड, तालाब, झीलों व वृक्षों से आच्छादित मनोरम वातावरण था, परन्तु अब यह धीरे धीरे कंक्रीट के जंगलों में बदल चुका है।

संस्था द्वारा इस दिशा में सुधार लाने के उद्देश्य से तीन कालोनियों, अस्पताल, स्टेडियम एवं विभिन्न ग्राम सभाओं को वृक्षों से आच्छादित किया जा चुका है। वाराणसी के सेवापुरी, चिरईगाँव एवं आजमगढ़ के लालगंज ब्लाक के बीस गाँवों में भी वृक्षारोपण किया गया है।

संस्था द्वारा 2 वर्ष की अवधि में लगभग ३ पेड़ों का रोपण विविध स्थानों पर किया गया जिनमें 75 प्रतिशत सुरक्षित है। इन वृक्षों में मुख्य रुप से फलदार वृक्ष ,पीपल, नीम, अर्जुन, सीशम, बेल, बालमखीरा, ऑवला, अमरुद, पारिजात व अनेक औषधि गुण युक्त वृक्ष है। जिससे वातावरण को स्वच्छ एवं स्वस्थ्य रखा जा सके।

जल प्रबन्धन एवं वाटर हार्वेस्टिंग :- जल संसाधन का विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों में विशेष स्थान है। पृथ्वी की सतह का लगभग तीन-चौथाई भाग जल से भरा हुआ है। व्यवहार में विश्व की कुल जलापूर्ति का केवल`3 प्रतिशत भाग ही मानव के दैनिक उपयोग के लिए आसानी से उपलब्ध होता है।

वर्तमान में विश्व की जनसंख्या लगभग 6.5 अरब है तथा इसमें हर वर्ष लगभग 8 करोड़ लोगों की वृद्धि हो रही है। बढ़ती जनसंख्या के कारण हर वर्ष लगभग 64 अरब क्यूबिक मीटर स्वच्छ जल की मांग बढ़ जाती है। यह मात्रा राइन नदी के कुल वार्षिक प्रवाह के बराबर है। 197 के बाद पृथ्वी पर दो अरब लोग बढ़े हैं जिसके कारण आज प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता में एक-तिहाई की कमी आयी है।

संस्था द्वारा वाराणसी,जौनपुर, आजमगढ़ एवं गुजरात के कुछ क्षेत्रों में जल संसाधनों की बचत हेतु ग्रामीण क्षेत्र एवं नगरीय क्षेत्र में अलग-अलग प्रकार से कार्य किया जा रहा है ग्रामीण क्षेत्र में प्रायः सिचाई ट्यूबवेल अथवा नहरों द्वारा पानी को पूरे खेत में भर दिया जाता है। संस्था द्वारा खेतों में टपक सिंचाई, लेपा (स्प्2 श्ठ्ठद्गह्द्4 क्क्द्गष्ड्डह्यद्बश्ठ्ठ श्चद्यद्बष्ड्डह्लद्बश्ठ्ठ) एवं स्पिंगलर (स्श्चह्द्बठ्ठद्मद्यद्गह) प्रणाली के बारे में प्रशिक्षित किया जा रहा है गाँवों में बहने वाली बरसाती या सहायक नदियों पर चेक डैम बनाने का प्रशिक्षण भी संस्था द्वारा दिया जा रहा है। कुछ जिलों में निर्माण का कार्य भी प्रस्तावित है। जिसके द्वारा 6 प्रतिशत जल की बचत की जा सकती है। जन जागरुकता द्वारा भी प्रति व्यक्ति एक लीटर पानी की खपत कम करके एक वर्ष में ४५२ अरब लीटर पानी की बचत का सूत्र संस्था द्वारा दिया जा रहा है।

शहरी क्षेत्रों में लगभग 9 प्रतिशत वर्षा जल व्यर्थ में नालियों के जरिये बह कर नदियों में मिल जाता है साथ ही शहरों का अपशिष्ट जल भी व्यर्थ चला जाता है। इसके संरक्षण हेतु संस्था द्वारा नगरीय क्षेत्र में घरेलू व्यर्थ जल की उपचार प्रणाली एवं छत पर गिरने वाले वर्षा जल का संचयन प्रणाली पर कार्य किया जा रहा है इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 5 विद्यालयों एवं 3 कालोनियों में संस्था द्वारा कार्य किया गया है।

कचरा प्रबन्धन एवं वर्मी कल्चर :- प्रत्येक व्यक्ति अपने घर में कम या ज्यादा कचरा निकालता है। इस कचरे को मुख्य रूप से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- (1) जैव अपघटकीय कचरा (Bio-degradable waste) (2) अजैव-अपघटकीय कचरा (Non Bio-degradable waste) विगत कुछ वर्षों से घरेलू कचरा निपटाने की समस्या पर ज्यादा ध्यान दिया जाने लगा है क्योंकि यह विकराल रूप धारण करती जा रही है।

संस्था द्वारा विभिन्न कालोनियों, विद्यालय कैंपस एवं ग्रामीण क्षेत्रों में इसका सफलतापूर्वक संचालन किया जा रहा है जहाँ से प्रत्येक माह 2 किलो वर्मी खाद तैयार की जा रही है। गाँवों में कृषि के वाई प्रोडक्ट का उपयोग खाद बनाने में करने हेतु संस्था द्वारा नाडेप, वर्मीपिट एवं साधारण पिट का निर्माण एवं प्रशिक्षण का कार्य किया गया है इसमें आजमगढ, वाराणसी एवं चन्दौली जिले के गाँव व शहरी क्षेत्र हैं।

प्रशिक्षण एवं ट्रेनिंग कार्यक्रम तथा वर्कशाप :- असंतुलित जनसंख्या-वृद्धि का पर्यावरण पर सीधा प्रभाव पड़ता है। मनुष्य जब भी जल, थल और वायु का असंतुलित दोहन करता है तो प्रदूषण उत्पन्न होता है। जब मनुष्य प्रकृति के साथ छेड़छाड़ करता है तो उसका संतुलन बिगड़ता है। असंतुलित जनसंख्या-वृद्धि पर्यावरण को प्रदूषित करने वाला प्रमुख कारण है। औद्योगीकरण और मशीनीकरण भी वातावरण पर बुरा प्रभाव डालते हैं।

इन समस्याओं को ध्यान में रखकर संस्था द्वारा जल प्रबन्धन, वर्मीकल्चर, हार्टिकल्चर,सोशल एवं एन्वायरामेन्टल इफ्रास्ट्रक्चरल चेंज, प्रदूषक तत्व, कृषि विकास, औषधिय पौधों तथा अन्य सामाजिक एवं समसामयिक मुद्दों पर प्रत्येक वर्ष लगभग 1 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अयोजन किया जा रहा है। जिसके उत्साह वर्धक परिणाम सामने आ रहे हैं।

सार संस्था द्वारा क्लीन परियोजना के अन्तर्गत काशी विश्वनाथ मंदिर, बी.एच.यू. प्रांगण में 'शुद्ध पेय जल' उपलब्ध कराने के उद्देश्य से स्लो सैंड सिस्टम पर आधारित 'जल तारा फिल्टर'

लगाया गया है जिसकी प्रतिदिन ५ लीटर पानी शुद्ध करने की क्षमता है। मंदिर परिसर में श्रद्धालु इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं।

पेपर रिसाइकिल यूनिट :- वर्तमान में प्रत्येक व्यक्ति को कागज की जरुरत है तथा हम उसका उपयोग करने के पश्चात् उसे फेक देते हैं जिसका कोई उपयोग नही हो पाता है, इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये संस्था द्वारा 'क्लीन इंडिया परियोजना' के तहत संत अतुलानन्द रेजिडेन्सियल एकेडमी, होलापुर में एक पेपर रिसाइकिल यूनिट की स्थापना की गयी है जिसमें वेस्ट पेपर से नये पेपर तैयार हो सकते हैं जिसका उपयोग लेटर पैड, कार्ड, लिफाफे, फाईल आदि अनेकों कार्य में किया जा सकता है इसकी क्षमता ३ साइज के ५ पेपर प्रति दिन की है।

ग्रामीण रिसोर्स सेन्टर :-

संस्था द्वारा वाराणसी के सेवापुरी ब्लाक में ग्रामीण रिसोर्सस ेन्टरख ोलाग याह ैं जिसका उद्देश्य ग्रामीणों को कम्प्यूटर की शिक्षा प्रदान करना, टेलिकान्फ्रेन्सिंग (Teli confrensing) की सुविधा,स्वयं सहायता समूह का निमार्ण एवं रोजगार, उन्नत बीज, औषधिय पौधों के उत्पादन एवं विपणन तथा अन्य कृषि से सम्बन्धित समस्याओं का निदान एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना है।

नैस्डेप कार्यक्रम- संस्था द्वारा ''राष्ट्रीय संपोषी विकास एवं पर्यावरण जागरुकता कार्यक्रम'' की शुरुआत २०१० से की गयी है इसमें पर्यावरण वैज्ञानिक, सामाजिक कार्यकर्ता, प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद् , कृषि वैज्ञानिक, डाक्टर, शोधार्थी सभी जुड़े है इससे जुड़ने हेतु २ रु० का शुल्क रखा गया है। इसमें २२ प्रकार के पर्यावरण से सम्बन्धित कार्यक्रम शामिल है।

पर्यावरण जागरुकता एवं क्रियान्वयन -एक नजर में

Society for Social Action & Research (SSAR Sansthan)
Pandeypur, Varanasi
Phone:- (0542) 2586012, Mo. 9415686502
E-mail:-ssar_sansthan@yahoo.com, Cleanvaranasi@yahoo.co.in
Visit us :- www. ngogateway.org./ssarsansthan